हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल (केंद्रीय) विश्वविद्यालय

श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखंड–246174

जीवा ज्योतिरशीमहि
हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय

प्रो० गुड्डी बिष्ट
संयोजक एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
हे०न०ब०ग० केन्द्रीय वि० वि० श्रीनगर (ग०)

कला, संचार एवं भाषा संकाय

पाठ्यक्रम

हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा–विभाग

(राष्ट्रीय शिक्षा नीति : 2020 के अनुरूप)

एम॰ए॰ प्रथम एवं द्वितीय सेमेस्टर

(सत्र 2025–26 से लागू)

Amit Sharma Rohit Kumar

29/8/2025

प्रो. गुड़डी बिष्ट पंवार,
संयोजक एवं विभागाध्यक्षा – हिन्दी विभाग
हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल (केंद्रीय) विश्वविद्यालय,
श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखंड–246174

एम॰ए॰ प्रथम सेमेस्टर			
क्र.सं.	**प्रश्नपत्र का नाम**	**कोड**	**क्रेडिट**
1	हिंदी साहित्य का इतिहास (आरंभ से भक्तिकाल तक)	MA101	05
2	भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा	MA102	05
3	भारतीय काव्यशास्त्र	MA103	05
4	आधुनिक काव्य	MA104	05
5	i मध्यकालीन काव्य (विकल्प-1)	MA105(i)	04
	ii प्रेमचंद (विकल्प-2)	MA105(ii)	
	iii कंप्यूटर और हिंदी (विकल्प-3)	MA105(iii)	
		कुल क्रेडिट	**24**

एम॰ए॰ द्वितीय सेमेस्टर			
क्र.सं.	**प्रश्नपत्र का नाम**	**कोड**	**क्रेडिट**
1	हिंदी साहित्य का इतिहास (रीतिकाल से आधुनिक काल तक)	MA201	05
2	हिंदी गद्य की विविध विधाएं	MA202	05
3	पाश्चात्य काव्यशास्त्र	MA203	05
4	लोक साहित्य	MA204	05
5	i छायावादी काव्य (विकल्प-1)	MA205(i)	04
	ii हिंदी भाषा और विज्ञापन (विकल्प-2)	MA205(ii)	
	iii सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' (विकल्प-3)	MA205(iii)	
		कुल क्रेडिट	**24**

एम॰ए॰ प्रथम सेमेस्टर

प्रश्नपत्र - हिंदी साहित्य का इतिहास (आरंभ से भक्तिकाल तक)

पहला प्रश्नपत्र (MA101)

पूर्णांक = 100
मुख्य परीक्षा = 60
आंतरिक परीक्षा = 40
क्रेडिट = 05

इकाई-1

इतिहास दर्शन और साहित्येतिहास, हिंदी साहित्य का इतिहास लेखन की परंपरा, हिंदी साहित्य का इतिहास : काल, विभाजन और नामकरण, हिंदी साहित्य इतिहास के आधार।

इकाई-2

- हिंदी साहित्य– आदिकाल की पृष्ठभूमि, आदिकाल की प्रमुख परिस्थितियां (सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक)।
- सिद्ध और नाथ साहित्य, जैन साहित्य, रासो साहित्य, आदिकालीन साहित्य की प्रवृत्तियां, लौकिक साहित्य, प्रतिनिधि रचनाकार और उनकी रचनाएं।

इकाई-3

- पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि।
- सीमांकन।
- परिवेश (राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक स्थिति)।
- भक्ति आंदोलन।
- विभिन्न काव्यधाराएं एवं वैशिष्ट्य।

इकाई-4

- निर्गुण एवं सगुण भक्ति काव्य, निर्गुण भक्ति का स्वरूप।
- संत काव्यधारा।
- निर्गुण भक्ति धारा के प्रमुख कवि।
- प्रेमाख्यान काव्य का स्वरूप : प्रवृत्तियां एवं प्रमुख कवि।
- रामभक्ति शाखा एवं कृष्ण भक्ति शाखा काव्य का स्वरूप : प्रवृत्तियां एवं प्रमुख कवि।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ॰ नगेंद्र।
2. हिंदी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल।
3. हिंदी साहित्य का आदिकाल – डॉ॰ हजारी प्रसाद द्विवेदी।
4. हिंदी साहित्य का उद्भव और विकास – डॉ॰ हजारी प्रसाद द्विवेदी।
5. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी।
6. साहित्य का इतिहास दर्शन – नलिन विलोचन शर्मा।

नोट – संपूर्ण पाठ्यक्रम से आठ (08) दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किन्हीं चार (04) प्रश्नों का उत्तर देना सुनिश्चित होगा।

Course Outcomes

हिंदी साहित्य का इतिहास (आंरभ से भक्तिकाल तक)

1. विद्यार्थी हिंदी साहित्य के इतिहास के बारे में आधारभूत जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी हिंदी साहित्य के विभिन्न पहलुओं को समझने की कोशिश कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी सीखी हुई जानकारी को वास्तविक जीवन के संदर्भ में लागू करने का प्रयास करेंगे।
4. विद्यार्थी साहित्यिक तत्वों की गहरी समीक्षा और विश्लेषण कर सकेंगे।
5. विद्यार्थी हिंदी साहित्य के विभिन्न पहलुओं का मूल्यांकन करने में सक्षम रहेंगे।
6. विद्यार्थी विभिन्न विचारों और दृष्टिकोणों को एकत्रित करके नया दृष्टिकोण विकसित करने का प्रयास कर सकेंगे।

एम॰ए॰ प्रथम सेमेस्टर

प्रश्नपत्र - भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा

दूसरा प्रश्नपत्र (MA102)

पूर्णांक = 100
मुख्य परीक्षा = 60
आंतरिक परीक्षा = 40
क्रेडिट = 05

इकाई-1

- भाषा विज्ञान : स्वरूप एवं क्षेत्र।
- भाषा विज्ञान के अध्ययन की पद्धतियां।
- भाषा विज्ञान की विविध शाखाएं।
- भाषा विज्ञान का ज्ञान की अन्य शाखाओं से संबंध।

इकाई-2

- हिंदी की ध्वनियां– स्वर और व्यंजन।
- हिंदी शब्द संपदा।
- हिंदी की शब्द कोटियां– संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया–विशेषण।
- हिंदी की कारकीय व्यवस्था।
- हिंदी भाषा के क्रिया रूपों का सामान्य परिचय।

इकाई-3

हिंदी भाषा–संरचना

- ध्वनि–संरचना।
- शब्द–संरचना।
- रूप–संरचना।
- वाक्य–संरचना।

इकाई-4

भाषा के संवर्द्धन में कृत्रिम बुद्धिमता की उपयोगिता

- कृत्रिम बुद्धिमता और भाषा का संबंध।
- व्याकरणिक रूप से कृत्रिम बुद्धिमता की स्वीकारोक्ति।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में हिदी भाषा और कृत्रिम बुद्धिमता के प्रगामी प्रयोग।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी भाषा का इतिहास : धीरेंद्र वर्मा।
2. हिंदी भाषा का उद्गम और विकास : उदयनारायण तिवारी।
3. आधुनिक हिंदी के विविध आयाम : प्रो॰ कृष्ण कुमार गोस्वामी।
4. हिंदी का सामाजिक संदर्भ : रवींद्रनाथ श्रीवास्तव।
5. भाषा और भाषा विज्ञान : नरेश मिश्र।
6. भाषा विज्ञान : भोलानाथ तिवारी।
7. नवीन भाषा विज्ञान : तिलक सिंह।
8. भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र : कपिलदेव शास्त्री।
9. भाषा विज्ञान की भूमिका : देवेंद्र नाथ शर्मा।

नोट – संपूर्ण पाठ्यक्रम से आठ (08) दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किन्हीं चार (04) प्रश्नों का उत्तर देना सुनिश्चित होगा।

<u>Course Outcomes</u>

<u>भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा</u>

1. इस पाठ्यक्रम से छात्र–छात्राएं भाषा एवं भाषा विज्ञान के स्वरूप, उसकी विविध शाखाओं और हिंदी भाषा की ध्वनियों, शब्द–संपदा व क्रिया–प्रणाली से संबंधित गहन आधारभूत ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।
2. छात्र–छात्राएं रूप, ध्वनि, शब्द, वाक्य–संरचना एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित भाषा उपयोग जैसे तकनीकी पक्षों को व्यावहारिक रूप से समझने और प्रयोग करने की क्षमता अर्जित कर सकते हैं। बहुभाषिकता जैसे संदर्भों में भाषा का व्यावहारिक एवं सैद्धांतिक पक्ष उजागर होने से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आधार पर भाषा की विविध शाखाओं का विवेचन एवं कार्यान्वयन किया जाएगा।
3. छात्र–छात्राएं हिंदी भाषा की संरचना और व्याकरणिक नियमों का उपयोग करके व्यावहारिक भाषा विश्लेषण एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता के अनुप्रयोग को व्यवहार में लाने में सक्षम होते हैं। विश्लेषणात्मक पद्धति द्वारा भाषा का विवेचन करने से उसके प्रति जिज्ञासा की समझ विकसित होगी तथा उसका विवेचन भाषा को सीखने में काम आएगा, जिससे वे प्रभावी रूप में अपनी बात लिखित व मौखिक रूप में व्यक्त करना सीखेंगे।
4. छात्र–छात्राएं हिंदी भाषा के अध्ययन के माध्यम से भाषाई विविधता, भारतीय भाषाई चेतना और समावेशी समाज की ओर नैतिक व मानवीय दृष्टिकोण विकसित करेंगे।
5. छात्र–छात्राएं भाषा विज्ञान और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के समन्वय से भाषा संसाधन, अनुवाद, शिक्षण तथा तकनीकी लेखन जैसे क्षेत्रों में रोजगार व स्वरोजगार प्राप्त कर सकते हैं।

एम॰ए॰ प्रथम सेमेस्टर
प्रश्नपत्र - भारतीय काव्यशास्त्र
तीसरा प्रश्नपत्र (MA103)

पूर्णांक = 100
मुख्य परीक्षा = 60
आंतरिक परीक्षा = 40
क्रेडिट = 05

इकाई-1

- काव्य का स्वरूप।
- काव्य–लक्षण, काव्य के तत्व।
- काव्य–प्रयोजन, काव्य–हेतु एवं काव्य–सृजन की प्रक्रिया।
- काव्य की आत्मा।

इकाई-2

- रस की परिभाषा, रस के अवयव एवं प्रकार।
- रस–निष्पत्ति एवं रस–सूत्र की व्याख्या।
- रसानुभूति की प्रक्रिया एवं स्वरूप।
- साधारणीकरण एवं सहृदय की स्थिति।

इकाई-3

- अलंकार सिद्धांत–मूल स्थापनाएं।
- अलंकारों का वर्गीकरण।
- रीति–सिद्धांत।
- रीति– अर्थ, परिभाषा और स्वरूप।
- रीति के भेद।
- रीति और शैली का काव्यात्मा से संबंध।

इकाई-4

- ध्वनि–सिद्धांत।
- ध्वनि– अर्थ, लक्षण और स्वरूप।
- काव्यात्मा के रूप में ध्वनि।
- ध्वनि तथा रस–सिद्धांत का संबंध।

संदर्भ ग्रंथ

1. रस–मीमांसा : आचार्य रामचंद्र शुक्ल।
2. रस–सिद्धांत : डॉ॰ नगेंद्र।
3. भारतीय काव्यशास्त्र : भगीरथ मिश्र।
4. रीतिकाव्य की भूमिका : डॉ॰ नगेंद्र।
5. भारतीय काव्यशास्त्र के नए क्षितिज : राममूर्ति त्रिपाठी।
6. भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका : पंडित बलदेव उपाध्याय।
7. ध्वनि–सिद्धांत और हिंदी के प्रमुख आचार्य : त्रिभुवन राय।
8. साहित्य का स्वरूप : नित्यानंद तिवारी।
9. साधारणीकरण और काव्यास्वाद : राजेंद्र गौतम।

नोट – संपूर्ण पाठ्यक्रम से आठ (08) दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किन्हीं चार (04) प्रश्नों का उत्तर देना सुनिश्चित होगा।

Course Outcomes

भारतीय काव्यशास्त्र

1. इस प्रश्नपत्र में भारतीय आलोक में काव्य की विभिन्न धाराओं को स्पष्ट करते हुए भारतीय काव्यशास्त्रियों द्वारा प्रदत्त सिद्धांतों के आधार पर छात्र–छात्राओं को काव्य, रस, अलंकार, रीति, वक्रोक्ति ध्वनि और औचित्य जैसे काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों का शास्त्रीय एवं वैचारिक ज्ञान प्रदान किया जाता है, जिससे उनके अंदर साहित्य की समझ पैदा हो और वे विभिन्न विधाओं के संदर्भ में सैद्धांतिक संदर्भों को समझ सके।
2. छात्र–छात्राएं काव्य के विभिन्न घटकों की पहचान कर, उनका साहित्यिक विश्लेषण करने तथा सृजनात्मक अभिव्यक्ति में प्रयोग करने का कौशल अर्जित करते हैं।
3. छात्र–छात्राएं रस, अलंकार, ध्वनि और रीति की अवधारणाओं को विश्लेषणात्मक ढंग से काव्य–रचना और व्याख्या में लागू कर सकते हैं।
4. छात्र–छात्राएं काव्य की आत्मा, रसानुभूति, सहृदयता और साधारणीकरण जैसी अवधारणाओं के माध्यम से आलोचनात्मक दृष्टि और सौंदर्यात्मक संवेदनशीलता का विकास करते हैं।
5. छात्र–छात्राएं काव्य के माध्यम से मानवीय संवेदनाएं, नैतिक मूल्यों और सामाजिक सरोकारों की पहचान करते हैं और साहित्य के नैतिक पक्ष से जुड़ते हैं।
6. छात्र–छात्राएं काव्यशास्त्रीय ज्ञान का उपयोग शिक्षण, शोध, आलोचना, लेखन और साहित्य संपादन जैसे पेशेवर क्षेत्रों में करने के लिए तैयार होते हैं।

एम०ए० प्रथम सेमेस्टर
प्रश्नपत्र - आधुनिक काव्य
चतुर्थ प्रश्नपत्र (MA104)

पूर्णांक = 100
मुख्य परीक्षा = 60
आंतरिक परीक्षा = 40
क्रेडिट = 05

इकाई-1

- मैथिलीशरण गुप्त – साकेत का नवम सर्ग।
- माखनलाल चतुर्वेदी – पुष्प की अभिलाषा।

इकाई-2

- जयशंकर प्रसाद – आनंद सर्ग।
- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' – कुकुरमुत्ता।

इकाई-3

- नागार्जुन – गाँधी।
- अज्ञेय – नदी के द्वीप।

इकाई-4

- मुक्तिबोध – ब्रह्म राक्षस।
- राजेश जोशी – चाँद की वर्तनी।

संदर्भ ग्रंथ

1. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां – नामवर सिंह।
2. नई कविता और अस्तित्ववाद – रामविलास शर्मा।
3. समकालीन हिंदी कविता – परमानंद श्रीवास्तव।
4. कविता के नए प्रतिमान – नामवर सिंह।
5. आधुनिक हिंदी काव्य – डॉ० सत्यनारायण सिंह।
6. आधुनिक हिंदी कविता – डॉ० हरदयाल।

नोट – संपूर्ण पाठ्यक्रम से व्याख्या भाग सहित आठ (08) दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किन्हीं चार (04) प्रश्नों का उत्तर देना सुनिश्चित होगा।

Course Outcomes

आधुनिक काव्य

1. कविता के सामाजिक, राजनीतिक और दार्शनिक पक्षों का आलोचनात्मक मूल्यांकन।
2. आधुनिक हिंदी कविता को भारतीय और वैश्विक साहित्यिक संदर्भों में रखने की दृष्टि विकसित होगी।
3. शोध की दृष्टि से कविता में निहित विमर्शों जैसे– स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, राष्ट्रीय चेतना और पर्यावरणीय चेतना को पहचान सकेंगे।
4. छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता आदि आंदोलनों की विशेषताओं का विश्लेषण कर सकेंगे।

एम॰ए॰ प्रथम सेमेस्टर
प्रश्नपत्र - मध्यकालीन काव्य (विकल्प–01)
पांचवां प्रश्नपत्र (MA105(i))

पूर्णांक = 100
मुख्य परीक्षा = 60
आंतरिक परीक्षा = 40
क्रेडिट = 04

इकाई-1

- मध्यकाल की अवधारणा : प्रवृत्ति और परिवेश, भक्ति की अवधारणा और प्रकृति, उत्तर एवं दक्षिण भारत में भक्ति, उत्तर भारत में भक्ति का आगमन, भक्ति आंदोलन की उत्पत्ति के कारण।
- भक्तिकाव्य का दार्शनिक आधार : योग दर्शन, अद्वैतवाद, सूफी दर्शन, विशिष्टाद्वैत, शुद्धाद्वैत, द्ववैताद्वैत, पुष्टिमार्गीय, द्वैतवाद।

इकाई-2

- उत्तर–मध्यकाल : प्रवृत्ति और परिवेश।
- उत्तर–मध्यकालीन सौंदर्य–बौध : स्थापत्य, चित्रकला, संगीत और साहित्य।
- रीतिकालीन काव्यधाराएं : रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त।

इकाई-3

- कबीर – कबीर : संपादक– हजारी प्रसाद द्विवेदी। (छंद क्रम 163, 164, 165, 168, 174, 175, 182, 187, 188, 189, 192, 193, 195, 198, 207)
- जायसी – पद्मावत, संपादक– वासुदेवशरण अग्रवाल (केवल नागमती वियोग खंड)।
- सूरदास – भ्रमरगीत सार, संपादक– आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पद संख्या।
- तुलसीदास – रामचरितमानस, गीताप्रेस गोरखपुर (उत्तरकांड, आरंभ के 25वें दोहे तक)।

इकाई-4

- बिहारी – बिहारी रत्नाकर, संपादक– जगन्नाथदास रत्नाकर। (दोहा संख्या 1, 2, 13, 20, 25, 32, 34, 38, 41, 46, 51, 55, 61, 70, 73, 84, 94, 101, 141 कुल 20 दोहे)
- घनानंद – स्वर्ण मंजूषा, संपादक– नलिन विलोचन शर्मा एवं केसरी कुमार। (छंद संख्या 1, 2, 8, 9, 14, 15, 16, 18, 21, 22)

संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी साहित्य का इतिहास : रामचंद्र शुक्ल।
2. हिंदी साहित्य का इतिहास : नगेंद्र।
3. त्रिवेणी : रामचंद्र शुक्ल।
4. कबीर : हजारी प्रसाद द्विवेदी।
5. कबीर : प्रभाकर माचवे।
6. पद्मावत : संपादक– वासुदेवशरण अग्रवाल।
7. जायसी : परमानंद श्रीवास्तव।
8. भ्रमरगीत सार : संपादक– आचार्य रामचंद्र शुक्ल।

नोट – संपूर्ण पाठ्यक्रम से व्याख्या भाग सहित आठ (08) दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किन्हीं चार (04) प्रश्नों का उत्तर देना सुनिश्चित होगा।

Course Outcomes

मध्यकालीन काव्य

1. विद्यार्थी मध्यकालीन हिंदी कविता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश को समझ सकेंगे।
2. भक्ति आंदोलन के प्रभाव और उसकी साहित्यिक अभिव्यक्तियों का विश्लेषण कर सकेंगे।
3. काव्य में निहित धार्मिक, दार्शनिक, नैतिक और सामाजिक मूल्यों का विवेचन कर सकेंगे।
4. तुलसीदास, सूर, कबीर, मीरा, रसखान आदि कवियों की कविताओं का गहराई से अध्ययन कर सकेंगे।

एम॰ए॰ प्रथम सेमेस्टर
प्रश्नपत्र - प्रेमचंद (विकल्प–02)
पांचवां प्रश्नपत्र (MA105(ii))

पूर्णांक = 100
मुख्य परीक्षा = 60
आंतरिक परीक्षा = 40
क्रेडिट = 04

इकाई-1

- उपन्यास– निर्मला, गोदान।

इकाई-2

- कहानी– मंत्र, बड़े घर की बेटी, सवा सेर गेहूँ, ठाकुर का कुंआ, शतरंज के खिलाड़ी।

इकाई-3

- नाटक– कर्बला।

इकाई-4

- निबंध– स्वदेशी आंदोलन, साहित्य का उद्देश्य, महाजनी सभ्यता।

संदर्भ ग्रंथ

1. प्रेमचंद और उनका युग– डॉ॰ रामविलास शर्मा।
2. हिंदी उपन्यास के सौंदर्य– डॉ॰ रामदरश मिश्र।
3. प्रेमचंद : एक साहित्यिक विवेचन– जैनेंद्र कुमार।
4. उपन्यास का शिल्प– गोपाल राय।
5. हिंदी उपन्यास– डॉ॰ रामदरश मिश्र।

नोट – संपूर्ण पाठ्यक्रम से व्याख्या भाग सहित आठ (08) दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किन्हीं चार (04) प्रश्नों का उत्तर देना सुनिश्चित होगा।

Course Outcomes

प्रेमचंद

1. प्रेमचंद के साहित्यिक विकासक्रम और उनके रचनात्मक वैविध्य को समझ सकेंगे।
2. प्रेमचंद के साहित्यिक दृष्टिकोण का विश्लेषण कर सकेंगे।
3. भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों– किसान, श्रमिक, स्त्री, दलित आदि के प्रति प्रेमचंद के सामाजिक दृष्टिकोण को पहचान सकेंगे।
4. प्रेमचंद के साहित्य में राष्ट्रीयता, समाज–सुधार, नैतिकता और मानवतावादी मूल्यों की पहचान कर सकेंगे।

एम॰ए॰ प्रथम सेमेस्टर

प्रश्नपत्र - कंप्यूटर और हिंदी (विकल्प–03)

पांचवां प्रश्नपत्र (MA105(iii))

पूर्णांक = 100
मुख्य परीक्षा = 60
आंतरिक परीक्षा = 40
क्रेडिट = 04

इकाई-1 : हिंदी और कंप्यूटर– एक परिचय

- कंप्यूटर की मूल संरचना और कार्यप्रणाली (हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर)।
- डिजिटल युग में हिंदी भाषा का विकास।
- हिंदी कंप्यूटिंग का इतिहास।
- हिंदी कंप्यूटिंग का वर्तमान परिदृश्य।

इकाई-2 : हिंदी भाशा एवं प्रौद्योगिकी

- हिंदी टेक्स्ट एडिटर्स (एम.एस.वर्ड)।
- हिंदी वेब पेज डिज़ाइन और ब्लॉगिंग (वर्डप्रेस और ब्लॉगर)।
- हिंदी और सोशल मीडिया प्रौद्योगिकी।
- हिंदी ई–बुक्स और डिजिटल लाइब्रेरी।

इकाई-3 : देवनागरी लिपि और कंप्यूटर

- हिंदी के विभिन्न फ़ॉन्ट्स (कृतिदेव, मंगल, अपराजिता)।
- हिंदी वर्तनी एवं व्याकरण सुधारक (स्पेल चेक टूल्स)।
- यूनिकोड और हिंदी टंकण उपकरण (इनस्क्रिप्ट, फोनेटिक, गूगल इनपुट टूल्स)।
- हिंदी में वॉयस टाइपिंग और स्पीच–टू–टेक्स्ट।

इकाई-4 : कंप्यूटर में हिंदी की संभावनाएं एवं चुनौतियां

- हिंदी पत्रकारिता और डिजिटल मीडिया में संभावनाएं।
- ि ाक्षण के क्षेत्र में संभावनाएं।
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं हिंदी।
- कंप्यूटर में हिंदी की विभिन्न चुनौतियां।

संदर्भ ग्रंथ

1. हरिमोहन : कंप्यूटर और हिंदी, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली।
2. हरिमोहन : आधुनिक जनसंचार और हिंदी, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली।
3. विजय कुमार मल्होत्रा : कंप्यूटर के भाषिक अनुप्रयोग, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
4. संतोष गोयल : हिंदी भाषा और कंप्यूटर, श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली।
5. पीके शर्मा : कंप्यूटर के डाटा प्रस्तुतीकरण और भाषा सिद्धांत, डायनेमिक पब्लिकेशन, दिल्ली।
6. द्विवेदी, संजय (संपादक) : सोशल नेटवर्किंग नए समय का संवाद, यश पब्लिकेशन, दिल्ली।

नोट – संपूर्ण पाठ्यक्रम से आठ (08) दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किन्हीं चार (04) प्रश्नों का उत्तर देना सुनिश्चित होगा।

Course Outcomes

कंप्यूटर और हिंदी

1. विद्यार्थी कंप्यूटर की मूल संरचना, हार्डवेयर–सॉफ्टवेयर, हिंदी कंप्यूटिंग का इतिहास और वर्तमान परिदृश्य को समझते हैं। वे डिजिटल युग में हिंदी भाषा के विकास और उसकी तकनीकी यात्रा को समझने में सक्षम होते हैं।
2. विद्यार्थी हिंदी टेक्स्ट एडिटिंग (MS Word), वेब पेज डिजाइनिंग, ब्लॉगिंग, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म आदि के व्यावहारिक उपयोग सीखते हैं। वे ई–बुक्स निर्माण, डिजिटल लाइब्रेरी उपयोग और हिंदी भाषा से संबंधित सॉफ्टवेयरों का प्रयोग कर तकनीकी दक्षता अर्जित कर सकते हैं।
3. हिंदी वर्तनी और व्याकरण सुधारक, स्पेल चेक टूल्स, वॉयस टाइपिंग जैसे उपकरण छात्रों में डिजिटल कार्यकुशलता को बढ़ाते हैं। यूनिकोड, इनस्क्रिप्ट, गूगल इनपुट टूल्स आदि का व्यावहारिक प्रयोग करके हिंदी टंकण और डिजिटल प्रकाशन कार्यों में दक्ष होते हैं। विद्यार्थी स्पीच–टू–टेक्स्ट, वॉयस टाइपिंग और AI आधारित हिंदी लेखन तकनीकों को व्यवहार में लाना सीखते हैं।
4. विद्यार्थी डिजिटल माध्यमों में हिंदी प्रयोग के भाषायी मर्यादा, सामाजिक उत्तरदायित्व और सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति संवेदनशील बनते हैं।
5. वे शिक्षण, पत्रकारिता, सोशल मीडिया संचालन और AI आधारित हिंदी अनुप्रयोगों के प्रयोग में स्वरोजगार की संभावनाएं तलाशते हैं। यह पाठ्यक्रम उन्हें डिजिटल उद्यमिता और हिंदी भाषा के नवाचार आधारित व्यवसायिक अवसरों से जोड़ता है।

एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर
प्रश्नपत्र - हिंदी साहित्य का इतिहास (रीतिकाल से आधुनिक काल तक)
छठवां प्रश्नपत्र (MA201)

पूर्णांक = 100
मुख्य परीक्षा = 60
आंतरिक परीक्षा = 40
क्रेडिट = 05

इकाई-1

उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल) की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : काल, सीमा और नामकरण।
रीतिकाल साहित्य की विभिन्न धाराएं : प्रवृत्तियां और विशेषताएं, प्रतिनिधि रचनाकार और रचनाएं।

इकाई-2

आधुनिक काल : नामकरण, सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, 1857 की राजक्रांति एवं पुनर्जागरण, मध्यकालीनता से आधुनिकता की ओर, आधुनिकता, उत्तर आधुनिक विमर्श (संरचनावाद)।

इकाई-3

भारतेंदु युग : परिवेश, साहित्यिक प्रवृत्तियां एवं प्रमुख साहित्यकार।
द्विवेदी युग : साहित्यिक स्वरूप, साहित्यिक प्रवृत्तियां एवं प्रमुख रचनाकार।
छायावाद युग : सीमांकन, नामकरण तथा परिवेश, साहित्यिक प्रवृत्तियां एवं प्रमुख साहित्यकार।
उत्तर छायावादी काव्य की विविध प्रविधियां – प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, प्रमुख साहित्यकार, रचनाएं एवं साहित्यिक प्रवृत्तियां।

इकाई-4

हिंदी गद्य की प्रमुख विधाएं : कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि का उद्‌भव एवं विकासक्रम।
संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा आदि का विकासक्रम।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेंद्र।
2. हिंदी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल।
3. हिंदी साहित्य का आदिकाल – डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी।
4. हिंदी साहित्य का उद्‌भव और विकास – डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी।
5. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी।
6. साहित्य का इतिहास दर्शन – नलिन विलोचन शर्मा।

नोट – संपूर्ण पाठ्‌यक्रम से आठ (08) दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किन्हीं चार (04) प्रश्नों का उत्तर देना सुनिश्चित होगा।

Course Outcomes

हिंदी साहित्य का इतिहास (रीतिकाल से आधुनिक काल तक)

1. विद्यार्थी हिंदी साहित्य के इतिहास के बारे में आधारभूत जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी हिंदी साहित्य के विभिन्न पहलुओं को समझने की कोशिश कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी सीखी हुई जानकारी को वास्तविक जीवन के संदर्भ में लागू करने का प्रयास करेंगे।
4. विद्यार्थी साहित्यिक तत्वों की गहरी समीक्षा और विश्लेषण कर सकेंगे।
5. विद्यार्थी हिंदी साहित्य के विभिन्न पहलुओं का मूल्यांकन करने में सक्षम रहेंगे।
6. विद्यार्थी विभिन्न विचारों और दृष्टिकोणों को एकत्रित करके नया दृष्टिकोण विकसित करने का प्रयास कर सकेंगे।

एम॰ए॰ द्वितीय सेमेस्टर
प्रश्नपत्र - हिंदी गद्य की विविध विधाएं
सातवां प्रश्नपत्र (MA202)

पूर्णांक = 100
मुख्य परीक्षा = 60
आंतरिक परीक्षा = 40
क्रेडिट = 05

इकाई-1

- हिंदी गद्य साहित्य का उद्‍भव एवं विकास।
- विविध विधाओं का सामान्य परिचय।

इकाई-2

कहानी

- ईदगाह – प्रेमचंद।
- पाजेब – जैनेंद्र।
- परदा – यशपाल।

उपन्यास

- गुनाहों का देवता – धर्मवीर भारती।

इकाई-3

निबंध

- उत्साह – रामचंद्र शुक्ल।
- वाणी न्याय के मंदिर में – नगेंद्र।
- सदाचार का ताबीज – हरिशंकर परसाई।

इकाई-4

- अंधेर नगरी (नाटक) – भारतेंदु ।
- दीपदान (एकांकी) – रामकुमार वर्मा।
- गिल्लू (संस्मरण) – महादेवी वर्मा ।

संदर्भ ग्रंथ

1. प्रेमचंद और उनका युग – रामविलास शर्मा।
2. आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य – डॉ॰ हरदयाल।
3. प्रेमचंद और उनका युग – रामविलास शर्मा।
4. कहानी : नई कहानी – नामवर सिंह।
5. हिंदी रेखाचित्र – हरिवंश लाल शर्मा।

नोट – संपूर्ण पाठ्यक्रम से व्याख्या भाग सहित आठ (08) दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किन्हीं चार (04) प्रश्नों का उत्तर देना सुनिश्चित होगा।

Course Outcomes

हिंदी गद्य की विविध विधाएं

1. विद्यार्थी हिंदी गद्य की विविध विधाओं के बारे में सामान्य जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी हिंदी गद्य की विविध विधाओं (कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, निबंध इत्यादि) को समझने की कोशिश कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी गद्य की विधाओं की समीक्षा एवं गहन विश्लेषण कर सकेंगे।
4. विद्यार्थी हिंदी गद्य की विविध विधाओं के विभिन्न पहलुओं का मूल्यांकन करने में समर्थ हो सकेंगे।
5. विद्यार्थी विभिन्न विचारों को समझकर एक नए दृष्टिकोण द्वारा अपने विचारों को रचनात्मक रूप से प्रस्तुत करने में सक्षम होंगे।

एम॰ए॰ द्वितीय सेमेस्टर
प्रश्नपत्र - पाश्चात्य काव्यशास्त्र
आठवां प्रश्नपत्र (MA203)

पूर्णांक = 100
मुख्य परीक्षा = 60
आंतरिक परीक्षा = 40
क्रेडिट = 05

इकाई-1

- प्लेटो : काव्य के प्रति दृष्टिकोण एवं काव्य–सिद्धांत।
- अरस्तू : विरेचन सिद्धांत एवं त्रासदी विवेचन।
- लौंजाइनस : उदात्त संबंधी विचार।

इकाई-2

- टी.एस. इलियट : परंपरा और वैयक्तिक प्रतिभा का संबंध, निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत।
- कॉलरिज : कल्पना–सिद्धांत, काव्य–भाषा और कविता।
- मैथ्यू आर्नोल्ड : कविता और जीवन, जीवन और समाज, आलोचना का स्वरूप और प्रकार्य।

इकाई-3

- आई.ए. रिचर्डस : मूल्य सिद्धांत।
- वर्ड्सवर्थ का काव्यभाषा का सिद्धांत।

इकाई-4

आधुनिक समीक्षा की विशिष्ट प्रवृत्तियां

- मार्क्सवाद।
- अस्तित्ववाद।
- संरचनावाद।
- शैली विज्ञान।
- उत्तर आधुनिकता।

संदर्भ ग्रंथ

1. अरस्तू का काव्यशास्त्र : डॉ॰ नगेंद्र।
2. पाश्चात्य काव्यशास्त्र का इतिहास : डॉ॰ तारकनाथ बाली।
3. नई समीक्षा के प्रतिमान : डॉ॰ निर्मला जैन।
4. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : देवेंद्रनाथ शर्मा।
5. पाश्चात्य साहित्य चिंतन : निर्मला जैन।
6. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : इतिहास, सिद्धांत और वाद : डॉ॰ भगीरथ मिश्र।

नोट – संपूर्ण पाठ्यक्रम से आठ (08) दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किन्हीं चार (04) प्रश्नों का उत्तर देना सुनिश्चित होगा।

Course Outcomes

पाश्चात्य काव्यशास्त्र

1. प्रथम सेमेस्टर में भारतीय काव्यशास्त्र की समझ विकसित हो जाने के उपरांत जब छात्र–छात्राएं पाश्चात्य काव्यशास्त्रियों के सिद्धांतों का अध्ययन करते हैं तो उनमें भारतीय एवं पाश्चात्य दोनों के सिद्धांतों को समझने की ज्ञान दृष्टि के साथ–साथ तुलनात्मक दृष्टि भी विकसित होती है तथा पाश्चात्य जगत के प्रसिद्ध काव्यशास्त्रियों जैसे– प्लेटो, अरस्तू, कॉलरिज, इलियट, आई.ए. रिचड्र्स जैसे चिंतकों के काव्य सिद्धांतों द्वारा साहित्य का सैद्धांतिक एवं संवेदनात्मक पक्ष समझ आता है, जसका संपूर्ण प्रभाव उनके आचरण एवं मनोविज्ञान पर पड़ता है।
2. छात्र–छात्राएं काव्यालोचना की विविध पद्धतियों को समझते हुए उन्हें साहित्यिक पाठ के मूल्यांकन और विवेचन में लागू करने की दक्षता अर्जित करते हैं।
3. छात्र–छात्राएं आलोचना–सिद्धांतों (जैसे विरेचन, कल्पना, निर्वैयक्तिकता, उन्नयन आदि) को साहित्यिक विश्लेषण और व्याख्या में रचनात्मक रूप से प्रयोग कर सकते हैं।
4. छात्र–छात्राएं साहित्यिक दृष्टिकोणों में अंतर करना, वैकल्पिक व्याख्याएं प्रस्तुत करना तथा तर्कपूर्ण व विचारोत्तेजक शैली में अपने विचार व्यक्त करना सीखते हैं।
5. छात्र–छात्राएं आलोचनात्मक सिद्धांतों के माध्यम से साहित्य और समाज के मध्य संबंधों को समझते हुए मानवीय, नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों की पहचान करते हैं।
6. छात्र–छात्राएं आलोचना, लेखन, शिक्षण और संपादन जैसे क्षेत्रों में अपने विश्लेषणात्मक और व्याख्यात्मक कौशल के माध्यम से व्यावसायिक अवसरों के लिए तैयार होते हैं।

एम॰ए॰ द्वितीय सेमेस्टर
प्रश्नपत्र - लोक साहित्य
नवां प्रश्नपत्र (MA204)

पूर्णांक = 100
मुख्य परीक्षा = 60
आंतरिक परीक्षा = 40
क्रेडिट = 05

इकाई-1

- लोक : अर्थ, स्वरूप एवं परिभाषा।
- लोक वार्ता और लोक विज्ञान।
- लोक संस्कृति की अवधारणा, लोक संस्कृति और लोक साहित्य।

इकाई-2

- लोक और लोक साहित्य का अंतःसंबंध।
- भारत में लोक साहित्य के अध्ययन का इतिहास।
- लोक साहित्य की अध्ययन प्रक्रिया एवं संकलन की समस्याएं।

इकाई-3

- लोकगीत : स्वरूप एवं महत्व।
- लोकगाथा : स्वरूप एवं महत्व।
- लोकनाट्य : अर्थ, परिभाषा, प्रभाव।

इकाई-4

- लोककथा : स्वरूप एवं महत्व।
- लोकभाषा : उत्पत्ति एवं विकास।
- लोकसंगीत : प्रमुख प्रकार।

संदर्भ ग्रंथ

1. भारतीय लोक संस्कृति का संदर्भ : मध्य हिमालय – गोविंद चातक।
2. लोक साहित्य के प्रतिमान : डॉ॰ कुंदन लाल उप्रेती।
3. लोक साहित्य : सिद्धांत और प्रयोग – डॉ॰ श्रीराम शर्मा।
4. लोक साहित्य की रूपरेखा – डॉ॰ कृष्णचंद्र शर्मा।
5. लोक साहित्य विज्ञान – डॉ॰ सतेंद्र।

नोट – संपूर्ण पाठ्यक्रम से आठ (08) दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किन्हीं चार (04) प्रश्नों का उत्तर देना सुनिश्चित होगा।

Course Outcomes

लोक साहित्य

1. विद्यार्थी लोक साहित्य के अर्थ, स्वरूप, परिभाषा तथा प्रकार की आधारभूत जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी लोक साहित्य के विभिन्न पहलुओं को समझने में सक्षम होंगे।
3. विद्यार्थी लोक साहित्य के स्वरूप की समीक्षा व विश्लेषण कर सकेंगे।
4. विद्यार्थी लोक साहित्य से जुड़ी समस्याओं का निराकरण करने का प्रयत्न करेंगे।
5. विद्यार्थी लोक साहित्य के विभिन्न पहलुओं का मूल्यांकन करने के पश्चात नए दृष्टिकोण द्वारा रचनात्मक लेखन करने हेतु सक्षम होंगे।

एम॰ए॰ द्वितीय सेमेस्टर
प्रश्नपत्र - छायावादी काव्य (विकल्प–01)
दसवां प्रश्नपत्र (MA205(i))

पूर्णांक = 100
मुख्य परीक्षा = 60
आंतरिक परीक्षा = 40
क्रेडिट = 04

इकाई-1

- छायावाद की अवधारणा और स्वरूप।
- छायावाद की पृष्ठभूमि।
- छायावाद की प्रवृत्तियां।

इकाई-2

- छायावाद की रचना विधान।
- छायावाद का महत्व।

इकाई-3

- छायावाद के प्रमुख कवि।
- जयशंकर प्रसाद – श्रद्धा, लज्जा सर्ग (कामायनी)।
- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला – राम की शक्ति पूजा, सरोज स्मृति।

इकाई-4

- सुमित्रानंदन पंत – नौका विहार, बापू के प्रति, परिवर्तन, प्रथम रश्मि।
- महादेवी वर्मा – मैं नीर भरी दुःख की बदली, बीन भी हूँ, तुम्हारी रागनी भी हूँ, पंथ होने दो अपरिचित।

संदर्भ ग्रंथ

1. छायावाद– डॉ॰ नामवर सिंह।
2. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां : डॉ॰ नामवर सिंह।
3. हिंदी नवजागरण और छायावाद : डॉ॰ महेंद्रनाथ राय।
4. छायावाद की प्रासंगिकता : रमेश चंद्र शाह।
5. जयशंकर प्रसाद : नंददुलारे बाजपेयी।
6. निराला की साहित्य साधना : रामविलास शर्मा।

नोट – संपूर्ण पाठ्यक्रम से व्याख्या भाग सहित आठ (08) दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किन्हीं चार (04) प्रश्नों का उत्तर देना सुनिश्चित होगा।

Course Outcomes

छायावादी काव्य

1. विद्यार्थी छायावाद के उद्भव, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और प्रमुख विशेषताओं को समझ सकेंगे।
2. छायावादी कविता में निहित आत्मबोध, रहस्यवाद, प्रकृति चेतना और व्यक्तिवाद का विश्लेषण कर सकेंगे।
3. जयशंकर प्रसाद, निराला, पंत, महोदवी वर्मा आदि कवियों की कविताओं का गहराई से अध्ययन कर सकेंगे।
4. छायावाद में नारी विमर्श, राष्ट्रवाद, अध्यात्म और सौंदर्यबोध का अध्ययन कर सकेंगे।

एम॰ए॰ द्वितीय सेमेस्टर

प्रश्नपत्र - हिंदी भाषा और विज्ञापन (विकल्प–02)

दसवां प्रश्नपत्र (MA205(ii))

पूर्णांक = 100
मुख्य परीक्षा = 60
आंतरिक परीक्षा = 40
क्रेडिट = 04

इकाई-1

विज्ञापन और भाषा का परिचय

- विज्ञापन : अर्थ, परिभाषा और महत्व।
- विज्ञापन के उद्देश्य : आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक।
- विज्ञापनों में भाषा और संस्कृति का संबंध।
- भूमण्डलीकरण के दौर में विज्ञापन की भूमिका।

इकाई-2

हिंदी विज्ञापनों का स्वरूप एवं प्रभाव

- हिंदी विज्ञापनों का सांस्कृतिक और सामाजिक स्वरूप।
- विज्ञापनों में सांस्कृतिक प्रतीकों का प्रयोग।
- विज्ञापनों का समाज पर प्रभावः सकारात्मक और नकारात्मक पहलू।
- हिंदी विज्ञापनों में बदलते सामाजिक मूल्य।

इकाई-3

विज्ञापन माध्यम

- विज्ञापन माध्यम चयन के आधार।
- प्रिंट, रेडियो और टेलीविजन के लिए विज्ञापन
- डिजिटल विज्ञापन तथा आउट ऑफ होम विज्ञापन–होर्डिंग, पोस्टर, बैनर, साइनबोर्ड।
- सोशल मीडिया विज्ञापन–फेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब, सोशल नेटवर्किंग साइट्स।

इकाई-4

हिंदी विज्ञापनों का भाशाई विश्ले   ाण

- प्रिंट विज्ञापनों का भाषाई विश्लेषण।
- टेलीविजन और डिजिटल विज्ञापनों का भाषाई विश्लेषण।
- विज्ञापनों में हिंदी की बोलियों और लोकभाषा का प्रयोग।
- विज्ञापनों में हास्य, व्यंग्य और भावनात्मक अपील।

संदर्भ ग्रंथ

1. जनसंपर्क, प्रचार और विज्ञापन – विजय कुलश्रेष्ठ, राजस्थान प्रकाशन, जयपुर।
2. जनसंचार माध्यम – भाषा और साहित्य : सुधीश पचौरी, नटराज प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. डिजिटल युग में विज्ञापन – सुधासिंह, जगदीश्वर चतुर्वेदी, अनामिका पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
4. विज्ञापन की दुनिया – कुमुद शर्मा, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. विज्ञापन और ब्रांड – संजय सिंह बघेल, सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली।
6. मीडिया और बाजार – वर्तिका नंदा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली।

नोट – संपूर्ण पाठ्यक्रम से आठ (08) दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किन्हीं चार (04) प्रश्नों का उत्तर देना सुनिश्चित होगा।

Course Outcomes

हिंदी भाषा और विज्ञापन

1. इस पाठ्यक्रम में विद्यार्थी विज्ञापन की परिभाषा, अर्थ, उद्देश्य (आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक) और उसकी सांस्कृतिक एवं भाषाई अवधारणाओं को समझते हैं। वे भूमंडलीकरण के दौर में विज्ञापन की भूमिका, सामाजिक प्रभाव और हिंदी विज्ञापनों के बदलते मूल्यबोध को जानने में सक्षम होते हैं।
2. विद्यार्थी प्रिंट, टेलीविजन, डिजिटल और सोशल मीडिया के विभिन्न विज्ञापन माध्यमों की पहचान, चयन और विश्लेषण करने की तकनीकी दक्षता प्राप्त करते हैं। वे विज्ञापन निर्माण, लेखन, भाषा–प्रयोग, प्रतीकात्मक संप्रेषण आदि व्यावसायिक कौशल सीखते हैं।
3. सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स (Facebook, YouTube, Twitter आदि) पर विज्ञापन संप्रेषण के तकनीकी पक्षों को भी समझते हैं।
4. हास्य, व्यंग्य, भावनात्मक अपील जैसी भाषाई युक्तियों को विज्ञापन में कैसे प्रयोग किया जाता है, इसका अनुप्रयोग करना सीखते हैं। हिंदी की बोलियों, लोकभाषा और स्थानीय सांस्कृतिक प्रतीकों का विज्ञापन में प्रभावशाली प्रयोग करना सीखते हैं।
5. यह पाठ्यक्रम छात्रों को विज्ञापन लेखन, कॉपी राइटिंग, कंटेंट निर्माण, डिजिटल मार्केटिंग जैसे क्षेत्रों के लिए तैयार करता है। विद्यार्थी स्वतंत्र कंटेंट निर्माता, विज्ञापन विश्लेषक या सोशल मीडिया प्रबंधक के रूप में कार्य कर सकते हैं।

एम॰ए॰ द्वितीय सेमेस्टर

प्रश्नपत्र - सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' (विकल्प–03)

दसवां प्रश्नपत्र (MA205(iii))

पूर्णांक = 100
मुख्य परीक्षा = 60
आंतरिक परीक्षा = 40
क्रेडिट = 04

इकाई-1

कविताएं

- कलगी बाजरे की।
- यह दीप अकेला।
- साँप।

इकाई-2

- अपने–अपने अजनबी (उपन्यास)।
- शरणदाता (कहानी)।

इकाई-3

- उत्तर प्रियदर्शी (नाटक)।
- संस्कृति और परिस्थिति (निबंध)।

इकाई-4

- बसंत का अग्रदूत (संस्मरण)।
- एक बूंद सहसा उछली (यात्रा–वृतांत्त)।

संदर्भ ग्रंथ

1. अज्ञेय की आलोचना दृष्टि – राजेंद्र प्रसाद पांडेय।
2. अज्ञेय की यायावरी – शुभांगी श्रीवास्तव।
3. अज्ञेय के सामाजिक सांस्कृतिक सरोकार – कृष्णदत्त पालीवाल।
4. अज्ञेय से साक्षात्कार – कृष्णदत्त पालीवाल।
5. अज्ञेय : कुछ रंग, कुछ राग – श्रीलाल शुक्ल

नोट – संपूर्ण पाठ्यक्रम से व्याख्या भाग सहित आठ (08) दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किन्हीं चार (04) प्रश्नों का उत्तर देना सुनिश्चित होगा।

Course Outcomes

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

1. एक लेखक के रूप में अज्ञेय के समस्त लेखन को समझ सकेंगे।
2. विविध विधाओं में चिंतन और रचनात्मक उपस्थिति की पड़ताल कर सकेंगे।
3. अज्ञेय की प्रमुख रचनाओं की आलोचनात्मक समझ विकसित होगी।
4. अज्ञेय के रचना संसार के परिवेश की समझ विकसित होगी।

29/01/2025

प्रो. गुड्डी बिष्ट पंवार,
संयोजक एवं विभागाध्यक्षा – हिन्दी विभाग
हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल (केंद्रीय) विश्वविद्यालय,
श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखंड–246174

प्रो0 गुड्डी बिष्ट
संयोजक एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
हे0न0ब0ग0 केन्द्रीय वि0 वि0 श्रीनगर (ग0)